गम्मत

(हँसी-ठिठोली छत्तीसगढ़ी)
हास्य कविताओं का संकलन

●

मनोज श्रीवास्तव

वैभव प्रकाशन

रायपुर (छत्तीसगढ़)

ISBN : 81-89244- X

गम्मत

क्रृति-स्वाम्य : लेखकाधीन
प्रथम संस्करण : 2010-11
मूल्य : 100 रु.
आवरण : भुनेश्वर निर्मलकर
कम्पोजिंग : अमर टायपिंग, नवागढ़
amartyping@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रण-व्यवस्था
वैभव प्रकाशन
अमीनपारा चौक, पुरानी बस्ती,
रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001
फोन - 0771-4038958

MANOJ srivastava BY GAMMAT

प्रतिक्रियाओं और समीक्षाओं का स्वागत

इस संग्रह की रचनाओं पर लेखक और आम पाठक अपनी प्रतिक्रिया से प्रकाशक, लेखक और विश्व को अवगत करा सकते हैं ।
इस हेतु प्रयोग करें विश्वपत्रिका–
www.SahityaVaibhav.com

अपनी बात

यह मेरे लिये अत्यंत सौभाग्य की बात है कि मेरी मौलिक रचनाओं का प्रकाशन होने जा रहा है। निश्चित ही यह मेरे जीवन की बड़ी उपलब्धि है। मैंने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज की उन स्थितियों की ओर इंगित करने का प्रयास किया है जो प्रायः विसंगतियों से तथा समस्याओं से ग्रस्त है।

मेरी रचनाओं को पुस्तक का मूर्त रूप देने का संपूर्ण श्रेय पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के माननीय आयुक्त श्री राजीव चन्द्र श्रीवास्तव जी को जाता है। मैं अपनी श्रद्धामय कृतज्ञता उन्हें अर्पित करता हूं। पाठकों के सुझाव एवं मार्गदर्शन का सदैव स्वागत है।

मनोज श्रीवास्तव
शंकर नगर नवागढ़
तह. नवागढ़ जिला दुर्ग (छ.ग.)
पिन 491337
मो. 8878922092

संचालनालय संस्कृति एवं पुरातत्व
छत्तीसगढ़, रायपुर

राजीव श्रीवास्तव,
भा.पु.से.,
आयुक्त

कार्या. : 0771-2537404
टेलीफैक्स : 0771-2234731
ई.मेल. : deptt_culture@yahoo.co.in

अर्ध. शा. पत्र क्र. 2236/निज सहा./2011
दिनांक : 21 फरवरी 2011

शुभकामना पत्र

अत्यंत हर्ष की बात है कि श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव की रचनाओं का प्रकाशन पुस्तक के रूप में हो रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह साहित्य के लिये एक नया योगदान और समाज के लिये प्रेरणादायी साबित होगा।

मैं इस 'गम्मत' साहित्य पत्रिका के लिये अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

राजीव श्रीवास्तव
आयुक्त
पुरातत्व एवं संस्कृति
छ.ग. शासन

अनुक्रमणिका

1.	नारी के महिमा	8
2.	मोर छत्तीसगढ़ अलबेला	10
3.	**लमसेना**	**14**
4.	गोहार सुनही साहूकार	16
5.	हैप्पी बर्थ डे छत्तीसगढ़	18
6.	रात–दिन के पियई	20
7.	पीठ के लदना	**22**
8.	शर्ते लागू	**24**
9.	क्या है नेता	26
10.	रावण दहन फार्मूला	28
11.	आजादी का ढोंग	30
12.	चीर का मोल	31
13.	सुकून	33
14.	नांगपंचमी	34
15.	जिंदा लाश	36
16.	गरीबी का सुख	37
17.	फरमान	38

18.	दास्तान	39
19.	थोड़े की जरुरत	40
20.	दीवाली और दिवाला	41
21.	संविदा जीवन	42
22.	माली की कली	44
23.	**मंजिल**	**46**
24.	**दरवाजा**	**47**
25.	**मथुरा**	**49**
26.	**कानून**	**50**
27.	अखंड भारत	51
28.	**वन्दे – मातरम्**	**52**
29.	**इतिहास का गौरव**	**53**
30.	**मौत का जश्न**	**54**
31.	डर	55
32.	संस्कार	56
33.	नवरात्रि	**57**
34.	नारियां	58
35.	आजाद	59
36.	चरित्र	60
37.	माँ	61
38.	छत्तीसगढ़	62
39.	गुरतुर बोली	63
40.	**गुरू**	**64**
41.	जल	65
42.	वृक्ष	66
43.	बाल्मीकि	67
44.	मन के जीते जीत	68
45.	भाईचारा	69
46.	प्रभु	70
47.	मोर छत्तीसगढ़ के प्रगति बर	71
48.	माँ	72
49	माँ	73
50.	राजनीतिक मच्छर	74
51.	ग म्म त	76

वंदना

हे तीन लोक तैतीस देवता के प्यारे भगवान।
हम भी तेरी पूजा करते लेकिन हम इंसान।।
दया की दृष्टि सदा ही रखना और न कहना शेष।
भक्ति हमारी स्वीकार करो मंगल मूर्ति गणेश॥

हे माँ दया की दृष्टि डाल।
इस दुनिया से हमको तार दे॥
भक्ति हमारी स्वीकार कर।
माँ शारदे ! माँ शारदे !

1. नारी के महिमा

मोर देश के नारी का कहंवमैं,
अड़बड़ हवय महान रे,
अँचरा म राखे दूध ओहर,
अउ आँखी म पानी,
अइसने करत तो बीत गे भइया,
नारी तन जिंदगानी,
कतको सहिस हे गल्ला गारी – 2
कतको सहिस पिटान रे। मोर ...

मानुस तन के इही देवइया,
इही हर रखवाला,
तेखर ऊपर रोब जमाके,
बनगे तैं घरवाला,
इही हर तो बेटी बहू ए – 2
इहीच हवय सियान रे। मोर ...

कभू पी के दारु तैं मारे,
कभू दहेज मंगाये,
जरय रे पापी मानुस चोला,
थोरकिन म जंगाये,
रात के गारी दे के सुते तैं – 2
झगरा करे बिहान रे। मोर ...

दुर्गा बनके आइस कभू,
कभू बनिस महतारी,
इही हर तो लक्ष्मी बाई,
मान हे एखर भारी
करहू तभोले कम पर जाही – 2
कतको करव बखान रे। मोर ...

बिन नारी शक्ति के संगी,
जग ल कोन सम्हालही,
करम–धरम तो सबे नंदाही,
पाप ह बाढ़ही खाली,
एखरे पुन म धरती टिके हे – 2
जानत हवय जहान रे। मोर ...

❁❁❁

2. मोर छत्तीसगढ़ अलबेला

मोर छत्तीसगढ़ अलबेला,
इहाँ रोज मड़ई अउ मेला,
एला धान कटोरा कहिथें,
इहाँ सबझन सुख म रहिथें,
अउ महतारी माटी के ढेला। मोर ...

अड़बड़ तिहार मनाथे,
सबके पीरा जनाथे,
कोनो नोहय अलग जी,
सबझन हवयं सकेला। मोर ...

रामधुनी ल संजोके,
मंदिर म पूजा होथे,
देवी दाई के भगत मन,
जेवारा ओखर बोथे,
जसगीत ओखर साजय,
अउ ठंढा घलो वो होथे,
तहाँ चढ़थे नरियल भेला। मोर ...

पंडवानी नाचा गम्मत,
इहाँ फसल हे सम्मत,
खुशी से करथें नाचा,
बड़ पुन मानय भाँचा,
ठाकुर देव के महिमा,
महामाई हे सही मा,
राधुनी गुण गावन,
कथा हे एखर पावन,
जाबो चलव सुने ला। मोर ...

धरती दाई के कोरा,
तिहार हे तीजा-पोरा,
टुकना-टुकना खुरमी,
अउ ठेठरी बोरा-बोरा,
जाँता ल देखव घींसय,
चाउर गहूं ल पीसय,
बनगे अंगाकर रोटी,
सील बर हवय सिल्हौटी,
चटनी लगाके ओमा,
खावयं मंटोरा, गोमा,
अउ नून डार के बासी,
झेलय बाबू कासी,
अउ काय देबे दे ला। मोर ...

देखव नाचा पंथी,
सबके नाती छंती,
कुदरा धर जावा खंती,

बनी ल कर लव गंती,
मातर जागय पहटिया,
पैरा-डोरी के खटिया,
देवता म पूजयं बोकरा,
ओला खावयं छोकरी-छोकरा,
सब मातर देखे ल जावयं,
उहां जेन मिलिस तेला खावयं,
कोन पूछय सेव केला। मोर ...

इहां मनखे मन के बोली,
जइसे मधुरस के हे गोली,
सुवा-गीत मन भाथे,
एला नोनी मन ह गाथे,
बिहाव गीत के पारी,
भड़थें बड़ संगवारी,
तेल चढ़े बेर गाथे,
सुनबे तव मजा आथे,
बइठव लगही पंगत,
देखव इहां के रंगत,
सोहारी लडुवा-परोसा,
मिलय नहीं इहाँ दोसा
बेटी बिदा के पारी,
छाती म चलत हे आरी,
बेटी रोवय भारी,
दुःख हे बड़ संगवारी,
एहा लगथे कभू झमेला। मोर ...

गुरतुर–गुरतुर बानी,
सुख–दुख के जिंदगानी
चारो मुड़ा हे हरेली,
तिहार हवय बरपेली,
कहिथे इनला देहाती,
कोरा हे इंखर छाती,
एखर छोड़े कतको बानी,
नई बता सकवं मै जेला। मोर ...

❁❁❁

3. लमसेना

मोर गाँव के कका हरिया,
खोजे बर निकलिस लमसेना,
घूमत–घूमत पहुचिस एक ठन गाँव,
गांव के नाव रहय बठेना,

ओ मेर चार झन टुरा मन,
अपन छाती के गर्मी ल जुड़ावत रहय,
बीड़ी पी के फुकुर–फुकुर,
हवा म गोठ उड़ावत रहय,

फेर हरिया कका आघू बढ़िस,
के मिलही कोनो सुघरा,
तव ओती बर ले आत रहिन,
दू झिन लमेठवा उघरा,

हरिया ल सुरता अइस नानपन के संगी,
हरिया बइठे रहय पीपर छांव म,
ओखर संगी के नाव रहय समारु,
जेन हर मिलगे ओही गाँव म,

संगी मिलेके के खुसी म,
मुचमुचावत रहय हरिया,
गोठे–गोठ म जानिस परोस म हवय टूरा,
फेर हवय थोरकिन करिया,

तहाँ समारु दुनो टुरा देखेबर,
गीन सगा पारा,
त उइँॉ माते रहय झगरा,
अउ ठर्रा पिये रहय झारा–झारा,

बकबकाय रहिन सबो,
देत रहिन आनी–बानी के गारी,
कानों फेंकय सैंतमा अउ मलिया,
त कोनो लोटा अउ थारी,

हक खा के विचारिस कका हरिया,
भइगे मोर टुरी थापही घर बइठे छेना,
कोनो गाँव म ओखर बर नई मिलिस,
सुघर असन लमसेना।

❀❀❀

4. गोहार सुनही साहूकार

विकेन्सी निकलही, विकेन्सी निकली,
कहिके चारो डहर हांक परत हे,
विकेन्सी के भरोसा म बिचारा,
बेरोजगरिहा मन ह मरत हे,

सरकारी विकेन्सी हो गे हे फेन्सी,
तहूं ल मिलही नौकरी गनबे त करेन्सी,
तीन साल होगे,
विकेन्सी निकलतेच हे,
विकेन्सी घलो निकलिस त का के – रेल्वे !
अउ योग्यता – एम.एस.सी. !

अरे भकला ! तैं तो,
बी.ए. पढ़े हस रे,
रेल्वे म कहाँ मरबे,
चुपचाप बइठ जा,
शिक्षाकर्मी निकलही,
त भरबे,

कका ! चुपचाप बइठे म
पेट कइसे भरही,
पेट ल भरेबर,
कुछू तो करे ल परही,

जात हौं साहूकार के,
बनी म जाहूं,
अउ काहीं नहीं त,
बावन छैंसठ म काम चलाहूं,
अरे बेटा ! एहा
सरकार नोहे साहूकार ए,
मरत ले काम लीही,
दिन भर कमाबे तभो,
बीस रुपिया बनी दीही,

अरे ! मनखे तो खुद,
जीयत–जागत झाँपी ए,
पूरा संसार खा के पचो दिस,
तभे तो पेट हर पापी हे,

अरे जा बेटा !
सरकारी विकेन्सी तो,
हमर बर खट्टा मही हे,
साहूकार ह सरकार ए,
ओखरे बीस रुपिया सही हे।

❁❁❁

5. हैप्पी बर्थ डे छत्तीसगढ़

हेप्पी बर्थ डे छत्तीसगढ़,
ले हमन आवत हन, तैं आघू बढ़,
जउन हो सकही तउन करबो,
एक–दूसर संग लड़ मरबो,
आन राज्य के हिजगा बखानबो,
अपन गलती भले नई मानबो,
फेर तैं विकास के पलानीम चढ़। हेप्प ...
आवत हे नवा–नवा पीढ़ी,
तेला पियाबो चिलम अउ बीड़ी,
अउ मिलके तोर थोथना ल सुधारबो,
नवा पीढ़ी संग रोज एक पउवा मारबो,
अइसने नवा पीढ़ी के सपना तहूं गढ़। हेप्पी ....

हर चौक म चारी चुगली सेंटर खोलबो,
जेमा घेरी–बेरी चिल्लाके आय–बांय बोलबो,
अपने–अपन जूझ परबो,
बठवा विचार मा जिंदगी भर मरबो,
ए सब विकास ल अपने माथा म मढ़। हेप्पी ...
गरीब मन ल शिक्षित बनाबो,
गाँव–गाँव साक्षरता के टिमकी बजाबो,
लइका मन ल घलो भात–साग खवाबो,
बारा खड़ी अनार आम अगले जनम सिखाबो,
इतिहास छोड़, हमर वर्तमान तैं जरुर पढ़। हेप्पी ...

❁❁❁

6. रात–दिन के पियई

रात–दिनके पियई,
कूकुर कस जियई,
एके पइत मर न,
घेरी–बेरी के काय मरई,

कमई के पइसा,
पियई म जावत हे,
मतलबिहा संगी मन,
लूट–लूट के खावत हे,
अउ घर में होवत हे लड़ई। रात–दिन ...
पइसा के संग म,
जस घलो चल दिस,
मरत ले पियेस तेखर,
भगवान हरफल दिस,
घर, परिवार, परोसी मन,
कोनो नई पतियाय,
घरवाली ल सिधवा पाके,
लूट–लूट के खाय,
त कहाँ ले होही बड़ई। रात–दिन ...
घर ह बनगे दारु खोली,
सुवारी ह भितरहिन,

पी के तैं हर मजा उड़ाए,
घर वाले मन मरहीं,
पी के तैं बेहोस परे,
घरवाले मन रोवत हें,
खा–पीके तैं उछर–डरे,
तेला ओमन धोवत हें,
घर म करे मड़ई। रात–दिन ...
कमाए–धमाए कुछू नहीं,
मरत ले तैं हर पीये–खाये,
सब–चिज तोर बरबाद होगे,
पियई–पियई म का तैं पाए,
लइका तोर खाये बर तरसे,
देख–देख के वो ललचाए,
तैं तो ओला जियत म मारो,
का करय, कहाँ वो जाए,
ददा के नाव कोनो नई लय,
दरुहा के बेटा वो होगे,
अपजस करम तो तैं हर करे,
तेखर फल ल वो हर भोगे,
कोनो डहर चारा नई मिलय,
तइसन होगे बरई। रात–दिन ....

❀❀❀

7. पीठ के लदना

आ बेटा, चुरगे खाबे,
खा ले, तहाँ डिलवा ड हर मेछराबे,
गांव म घूम – घूम इतराबे,
अउ काटपत्ती, चौरंग म,
कमाके घलो तो लाबे। आ बेटा....

ददा हर कोलहू कस बइला,
कमावत हे,
सुक्खा रोटी ल,
रसमलई बरोबर खावत हे,
तेखर पीठ म,
लदना कस लदाबे। आ बेटा..

दाई हर बनी म जात हे,
तोला जनमाहे तेखर,
लागा ल छुटात हे,
सुआरी के कमई घलो ल,
मुसुर–मुसर हलाबे। आ बेटा..

घर वाले मन ल,
लहू के आँसू रोआवे,
ददा के कमाए मरजाद ल,
माटी म घलो तो मिलाबे,
दाई–ददा तो हक खागे,
उंखर जिये के सउंख बुतागे,
ठोमहा भर पानी म तो उन बुड़गे,
अउ काय गंगा लेके जाबे। आ बेटा..

❁❁❁

8. शर्तें लागू

आनी–बानी के आवत हे योजना,
भोरहा म डार के गड्ढा म बोजना,
जइसन फोन कंपनी हर करथे वादा,
रिम ले रिम म गोठियावव जादा,
सबो जगहा छागे योजना के जादू,
अउ बुटांची अक्षर म लिखे हे, 'शर्तें लागू'

गरिबहा मन के चिरहा छाती ल सिलही,
तीन रुपिया किलो म चाउर–गहूँ मिलही,
पूरा दुनिया म चलही गरीबी रेखा के जादू,
फेर तरी म लिखाय हे – 'शर्तें लागू'

शर्त हवय– गरीब के पांच इकड़ खेत होना चाही,
अउ जेन कमीसन दीही तेने गदगद ले पाही,

पूरा म बोहाय घर के मुआवजा मिलही,
किसान मन के मुरझाय मुह कान खिलही,
ए योजना बर पइसा मिलत हे आघू के आघू,
फेर फारम भरे के बेर लिखाय हे – 'शर्तें लागू'

शर्त हवय – घर हर बरसाती पानी म नई बोहाय रहना चाही,
अउ जेखर घर बोहाय हे तेनो धारे धार बोहाही।

विकलांग मन के भाग हर तको सहराही,
जम्मो झन ल योजना ह नौकरी धराही,
हमरो गांव म विकलांग हे समारु अउ फागू,
फेर नौकरी मिले के पहली – 'शर्तें लागू'

शर्त हवय – शरीर के कोनो भाग खराब नई होना चाही,
अउ जेखर खराब होही तेला पहली धकियाही।

त ए योजना मन ल सुनके,
विचारथंव के कोनो डहर भागहूं,
फेर जेती जाथंव तेती बर,
बुटांची अक्षर म लिखाए हे – 'शर्तें लागू'

❁❁❁

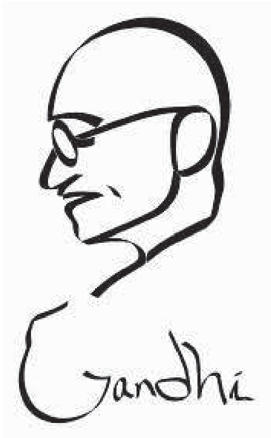

9. क्या है नेता

नेता क्या है ?
दल–बदल पार्टी का प्रमुख ? नहीं,
नेता गरीबों का सरदार है,
नेता दुखियों का सरकार है,

मजहब नहीं, ईमान है नेता,
हम सबकी शान है नेता,
पाक है नेता, पवित्र है नेता,
नेता गीता, कुरान है नेता,

हिन्दू नेता, मुस्लिम नेता,
सिक्ख है नेता, ईसाई नेता,
भगत नेता, अजाद है नेता,

दुखियों का फरियाद है नेता,
मालिक नेता, नौकर नेता,
सबके दिल की आवाज है नेता,

बड़ी नेता, छोटी नेता,
पेट का यारों रोटी नेता,
मंगलू नेता, हरिया नेता,
देश की सारी आवाम है नेता,

जल है नेता, थल है नेता,
आने वाला कल है नेता,
दुनिया का आधार है नेता,
मानवता का सार है नेता।

❁❁❁

10.रावण दहन फार्मूला

हमने अपने दिल्ली वाले भाई साहब को,
दशहरे का नेवता भेजा,
हमारे भाई साहब आये,
थोड़े मुस्कुराये और बोले ''भाई साहब,

हम शरमिंदा हैं,
हम हर साल रावण मार जाते हैं,
फिर भी रावण जिंदा है,''
बातों ही बातों में बात छिड़ गई,
हमारी भी उनसे भिड़ गई,

हमने कहा – 'भाई साहब, आप तो,
हर साल शरमिंदा होते हैं,
लेकिन बेचारे रावण को,
मारकर ही सोते हैं,''

अब देखिये, पिछले साल ही,
रावण को मारने के लिए,
किराये का राम मंगवाये थे लेकिन,
उनका निशाना भी चूक गया,

भैया, ये परमानेन्ट का जमाना है,
किराये के राम से काम नहीं चलता,
अब देखिये, मेरे पड़ोस में ही,
राजा दशरथ रहते हैं,
उनकी तीन रानियाँ हैं,
तीनों का नाम ''कौशिल्या'' है,
पर किसी के पेट से,
राम ने अवतार नहीं लिया,
उनके पेट से निकली ''माया ही माया,''
रावण को तो सभी मारना चाहते हैं,
स्वयं में राम का गुण नहीं है फिर भी,
यह ''कलियुग का रावण'' है बंधुवर,
ऐसे नहीं मरेगा,
रावण मारने का फार्मूला खोज दिखाइये,
अरे जाइये भाई साहब जाइये,
''रावण'' मारना है तो सही भेद वाला,
''विभीषण'' लेकर आइये।

❀❀❀

11. आजादी का ढोंग

लो जनाजा भी उठा अब,
ईमानो-धरम का,
इज्जत की जिंदगी,
रहमों-करम का,

मुर्दों के कंधे टिका ये वतन है,
लुटेरों के पहरे बेशकीमती रतन है,
कसाई के हाथों बकरे की जतन का। लो जनाजा ...
कौमी बुलंदी की बातें ये करते,
मंचों के भाषण में जब-जब ये मरते,
हजारों अतड़ियों के खूं से नहाते,
फिर भी अतड़ियों को कातिल बताते,
जिम्मे नहीं है किसी के मरन का। लो जनाजा ...

देशभक्ति का चोला गद्दारों ने पहना,
गुंडागर्दी ने पहना शराफत का गहना,
आबरु की कीमत बस बातों ही बातों,
आजादी को बेचे विदेशी के हाथों,
फिर क्यूं है ढोंग आजादे वतन का। लो जनाजा ...

❀❀❀

12. चीर का मोल

ये सामाजिक बंदिशें,
जिसमें अबला घुट–पिसे,
नृत्य तांडव काल का,
करता ये बयान है,
स्वार्थ का युग आज तो,
अति बलिष्ठ जवान है,

वक्त ताकता अब तलक,
पौरुष में कोई प्राण है ?
बुत में है मसीहा कोई,
तोड़ता है जो गर्दिशें। ये ...
कब तलक यूं ही रहेंगी,
हर तरफ खामोशियाँ,
मूंद आँखअंधे बने,
कायरों की मदहोशियाँ,

लाचार बैठी नार को,
देख आँखें सेंकता,
उसमें बैठी ''माँ'' कहीं
क्यूं नहीं है देखता !
पाक रिस्तों का मिलन,
अपनी सीमा लांघती,
''फटे चीर'' का मोल देखो,
आज ''द्रौपदी'' मांगती।

❀❀❀

13. सुकून

वह पूंजीपति भिखारी,
दर–दर भटकता था,
''सुकून'' की तलाश में,
दूर–दूर तक,
ताकता चला जाता था,
तब एक गरीब जो,
धनी था ''सुकून'' का
बिठाया उसको,
''सुकून'' की चारपाई पर,
परोसा भी उसने,
मक्के की रोटी में,
धनिया की चटनी का 'सुकून'
नींद भी आयी,
तो सपने में देखा,
यही तो था,
दुर्लभ 'सुकून'

❁❁❁

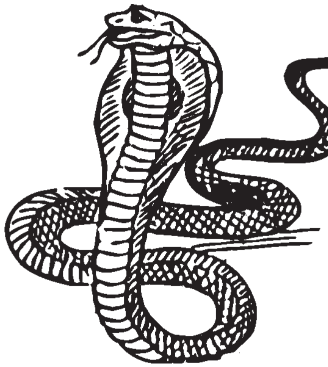

14. नांगपंचमी

नागपंचमी के पावन पर्व पर,
हमने नागदेवता को दूध पिलाया,
पूजा–अर्चना कर,
उस पर जल चढ़ाया,
नागदेवता प्रकट हुए,
हमने उनके चरण छुए,
नागदेवता ने कहा – बेटा,

तुम्हारी भक्ति अनुपम है,
जितनी तारीफ करुं कम है,परन्तु,
तुम वंश में, मानव रुपी सपोले हो,
और मानव रुपी सपोले में केवल,
तुम ही बड़े भोले हो,

तुमने मुझे तो जल चढ़ाया है,
अपनी भक्ति को मुझ तक बढ़ाया है,

लेकिन,ऐसी गलती,
कलियुगी नागों के साथ मत करना,
ये कलियुगी नाग, बड़े ही स्वार्थी,
धोखेबाज होते हैं,
बिन–बादल बरसात के,
भयानक गाज होते हैं, ये नाग,
समाज की शांति रुपी दूध को पी जाते हैं,
ऐसा कोई शायद ही हो,
जो इन नागों के काटने से जी जाते हैं,
इसलिए कहता हूं –
''ऐसे नागों का सर काट डालो,
इससे पहले कि ये देश को बाँटे,
इनको टुकड़ों में बाँट डालो,

इन जहरीले नागों के रहते,
न देश और न समाज का ही उद्धार है,
ऐसे नागों से देश को,
नागमुक्त करना ही,
''नागपंचमी'' का त्यौहार है।

❁❁❁

15. जिंदा लाश

बिक चुका है वह दिमाग जो कभी,
सुभाषचन्द्र बोस बनने की सोचता था,
बिक चुका है वह दिमाग जो किसी
अबला की आबरु बचाने को,
क्रांति बनकर आता था,

फूट गईं हैं वो आँखें जो किसी,
निरीह की हत्या का चश्मदीद थीं,
सूख गए हैं वो आँसू जो उस
दीन हरिया के लिये,
झील बनकर बहते थे,

कट गए हैं वो हाथ जो अंधेरा चीरने,
मशाल उठाकर कूच कर जाते थे,
कट गए हैं वो हाथ जो अनायास ही,
सूरदास को सड़क पार करा जाते थे,

कट गए हैं वो पैर जो काँटों भरे
मार्ग को चुनौती देते थे,
कट गए हैं वो पैर जो,
विधवा काकी की चीख पर,
मदद को दौड़ जाते थे,

मुझे इस जिल्लत भरी जिंदगी से,
मुक्ति का वर दीजिये,
आपने देखा है मेरी ''जिंदा लाश'' तो,
अंतिम संस्कार कर दीजिए।

❁❁❁

16. गरीबी का सुख

तुमने गरीबी का सुख भोगा है ! दुखीअमीर,
जिसमें है सोने की रोटी और चाँदी की खीर,
दौड़ा–भागा, खोजता रहा सुख–ताल,
जीवन तेरा बीत गया, हाल हुआ बेहाल,
घर तूने सूब सजाया, पड़ा रहा बिंदास,
फिर भी चैन मिला नहीं, मनवा तेरा उदास,
नौकर–चाकर सभी को पाला, चलाना चाहा राज,
भूल गया ! संसार चलाता, वही बड़ा ''महाराज,''
स्वार्थ के पुतलों को चढ़–बढ़ कर माना रिस्तेदार,
उन्हीं ने छोड़ा पहले तुझको, तब छूटा घर–बार,
समझ पड़ी तो जमी पे आया, यही तेरी औकात,
यही मिलेगी धनिया चटनी, और कोदई की भात,
यहाँ बीमारी मिट जाएगी, और अमीरी रोग,
मिट्‌टी में तू नत हो जा, ''गरीबी का सुख भोग।''

❀❀❀

17. फरमान

गुमी हुई किस्मत के अंधेरे में,
अपनी बदनसीबी की पहचान हूं मैं,
न कोई मंजिल, न कोई कारवाँ,
दो दिन की दुनिया का मेहमान हू मैं,
पता नहीं कोई नाम भी हो मेरा,
वक्त के इस दौर में गुमनाम हू मैं,
दुनिया के दामन में कुछ नहीं है मेरे लिए,
दूसरों की ऐशो–आराम का सामान हू मैं,
मजहब की उलझनों से दूर हूं,
जमाने की बेरहम बंदिशों में इल्जाम हू मैं,
खिदमत में हाजिर हू हर किसी के,
तुम्हारी हरदिल ख्वाहिशों का सुल्तान हूं मैं,
हर किसी की खुशी में भुला दिया गम अपना,
हुआ न पूरा कभी, वो अरमान हूं मैं,
कुछ तमन्नाएं मेरी भी हैं यारों,
आखिर इस भरी दुनिया में इंसान हू मैं,
दुनिया के दस्तूर से वाकिफ हूं,
अपनी जिंदगी के इरादों से अनजान हूं मैं,
ले कर दिया मैंने तेरी महफिल को रौशन,
क्या करूं रौशनी, काफिले सफर में सुनसान हूं मैं,
ये जिंदगी तो बस यूं ही चलरही है, खुद
अपनी ही 'मौत का फरमान'' हूं मैं।

❀❀❀

18. दास्तान

लिखने चला हूं अपने दिल की दास्तान,
रोकता है मुझको कोई डर अंजान,
लिखूं भी तो क्या ! सब सामने है,
मान चाहे न मान,
चाहूं कुछ भी लिखना, उठ खड़ा होता है अंधेरा,
अपना सीना तान,
मन में उठता है बार–बार यह,
ये सफेद पोश कुर्सी वाले हैं नवाब,
और देश की जनता है पान,
संदेह नहीं ये कुदालों के सरदार ही,
हैं धरती की शान,
चम्मच तो छोटा है,फिर भी है अभिमान,
घूम–घूम कर कहता सबको,
कान तेरा मेरे पंजे का गुलाम,
फिर भी कलम चलने को आतुर,
जो भी हो अंजाम,
सबके सब ''रावण'' ही दिखते,
जनमे तो कोई ''राम'' ।

❀❀❀

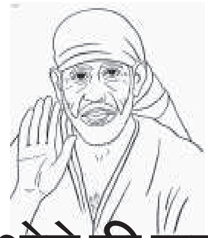

19. थोड़े की जरुरत

ये खुशियाँ क्या हैं ?
कुछ पल की घड़ियाँ ! या
दल–बदल पार्टी के नेताओं जैसे
बहूरुपिये, जो आते हैं और चले जाते हैं,
खुशियों का आना, महज एक बहाना है,
उनका काम, आकर दिल को बहलाना है,
हर कोई खुशियों को, समेटने में लगा है,
अगर कोई रईस अपने महल में,
बेसुध पड़ा है,तो किसी गरीब के लिए,
उसकी रोटियों में हीरा जड़ा है,
खुशी के लिए सबका, अपना नजरिया होता है,
एक पल में खुश होता है, दूसरे पल में रोता है,
आज के इन्सान ने,
खुशियों का गला दबा दिया है,
झूठे सुख के चक्कर में,
सारा समय गवाँ दिया है,
तो सुखी कौन है ? कोई नहीं !
असली सुख तो थोड़े में है,
खुशी तो तेरे मन में छुपी एक मूरत है,
थोड़ा रख, ''थोड़े की जरुरत'' है ।

❀❀❀

20. दीवाली और दिवाला

दीपावली हर साल है आती,
फिर भी सबके मन को भाती,
समय भी देखो आगे बढ़ गया,
महंगाई भी ऊपर चढ़ गया,
जब तक पुताई होगी न पूरी,
उसके बिना दीवाली अधूरी,
करोड़ीमल तो कर लेगा सब,
गरीबदास पर चल रही छूरी,
करोड़ी शॉप में टी-शर्ट छाँटे,
गरीब लगाये कुर्ते में टाँके,
आया दिन दीवाली का,
करोड़ी की खुशहाली का,
करोड़ी घर में मिठाई लाया,
गरीबदास को रोना आया,
करोड़ी पर लक्ष्मी मुस्काई,
गरीब पर गरीबी छाई,
करोड़ी ने एटम-बम फोड़ा,
गरीब ने अपना आँसू छोड़ा,
करोड़ी घर में चैनसे सोये,
गरीब अपनी किस्मत पर रोये,
दीवाली की तो बात निराली,
दिल खुश, पर जेब है खाली।

❁❁❁

21. संविदा जीवन

हमने बड़ी मेहनत से डिगरी कमाई,
फिर शासकीय सेवा की होर दृष्टि जमाई,
हमने सोचा-सरकार के पास अर्जी डालेंगे,
सरकार ने कहा- ''हम संविदा निकालेंगे''
और वह संविदा भी ''त्रिवर्षीय संविदा अंतराल''
के बाद निकलेगी, यह सुनकर,
हमारे अंदर की सारी ऐंठ गई,
हमारी बुद्धि बेचारी भी चुप बैठ गई,
हमारा मन सरकार की ओर से हटने लगा,
हमारे मन में भी विस्फोटक आत्मविश्वास जगा,
हमने सोचा- ''बार-बार की सरकारी ठेस नहीं सहेंगे''
''स्वरोजगार'' करेंगे और खुश रहेंगे,
हमने लोन के लिए बैंक में एप्लाई किया, तो बैंक ने
हमें जोर का झटका धीरे से दिया,
बैंक ने सूचना भेजी- ''हम क्षमा चाहते हैं,
हमने पहले वाली लोन एप्लाई जमा कर लिया,
हमारी ये योजना संविदा थी,
आपने आवेदन देर से दिया,''
जीवन से हारकर हमने मरण का फैसला किया,
हमने मरने का एप्लीकेशन बनाकर,
यमराज को भेज दिया,
यमराज ने इंटरनेट से सूचना भेजी,
''हमारी मृतलिस्ट पूर्ण हो गई है इसलिए
थोड़ा और जी लीजिए,

कृपया अगली ''संविदा मृत्यु'' तक
प्रतीक्षा कीजिए,''
यह सूचना पढ़कर,
हमारी बुद्धि चकरायी,
एक ''संविदा पंक्ति'',,
हमारे दिमाग में भी आयी,
''वाह रे कलियुग के बंदों, हमारा हृदय,
न चाहते हुए भी तुम पर फिदा है,
नौकरी के साथ-साथ अब इन्सान का,
जीवन-मरण भी ''संविदा'' है।

❁❁❁

22. माली की कली

एक बड़े प्रोफसेर से किसी ने पूछा,
कहते किसको हैं माली !
सुनकर कहा प्रोफेसर ने – ''जो बाग में,
बैठकर खाली बजाता है ताली,
कहते उसी को हैं माली,''
सुनकर जवाब कहा प्रश्नकर्ता ने –
''ऐसे नहीं बन जाता कोई माली,
''माली'' अर्थात जिसमें ''माँ'' लीन है,
उसी को कहते है माली''
वह जीवन भर जिन्हें देख जीता है,
हैं संतान पेड़ – पौधे उसके,
वह उनका पिता है,
उसकी साँसें पौधों में बसतीं,
देखकर उसको कली भी हँसती,
नन्हें पौधों को से – सेकर,
अंतर-मन से वह सुख पाता,
जब-जब देखें उनको तब,
कह ना पाये इतना खुश हो जाता,
सुनाऊँ कहानी ''माली'' की सुन,
सुनकर अपने मन में गुन,
एक दिन बाग में कली खिली तब काँटे ने कहा-
''पास आ जा तू नाबालिग है,
बोली कली – तू हट जा दूर,
वह 'माली' मेरा मालिक है''

माली आया उसे नहलाया,
प्यार से फिर कली मुस्काई,
खुशी माली के चेहरे पर छाई,
फिर एक रात चोर कोई आया,
सुन्दर कली देख ललचाया,
उसने प्यारी कली को मरोड़ा,
पास जाकर डाल को तोड़ा,
घबराई हुई कली चिल्लाई,
माली को आवाज लगाई,
पास में था माली सोया,
प्यारी कली के सपनों में खोया,
चोर, चुराकर कली को, भागा,
हुई आहट माली भी जागा,
उसने सोचा क्यूँ मैं सोया,
बहुत पछताया, बहुत था रोया,
माली दुखी रहने लगा अब,
फिर जाने खिले कली कब,
कुछ दिनमें फिर कली खिली कोई,
रहती थी वह खोई – खोई,
माली ने देखा कली मुस्काई,
उसे लगा, वही फिर आई,
फिर माली ने वैसा ही किया,
हर पल कली के साथ जिया,
कली खिल बनी फूलों की रानी,
यही थी माली–कली की कहानी,
जिसने बगिया ऐसी है पाली,
सुनो हकीकत, वही है 'माली'।

23. मंजिल

मेरे पास है दुनिया,
खयालों की दुनिया,
मेरे मन में उठती,
सवालों की दुनिया,
सपनों में हकीकत बसाने,
की दुनिया,
वो मेहनत का मंजर,
विश्वासों की दुनिया,
मजबूत इरादे और
निश्चय की दुनिया,
वर्तमान के भविष्य,
जवानों की दुनिया,
हर शख्स को 'मंजिल'
दिखाने की दुनिया।

❀❀❀

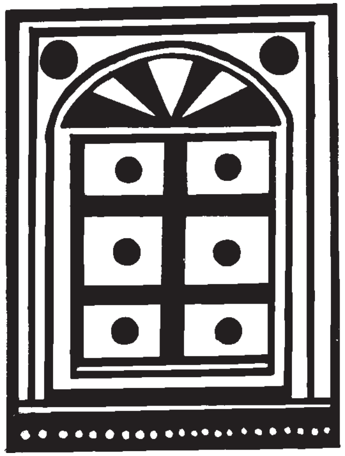

24. दरवाजा

दरवाजा मुझे पसंद है,
अभिनंदन भरा स्वागत
दरवाजे पर ही तो होता है,

दरवाजा मुझे पसंद है,
लक्ष्मी दरवाजे से ही तो
प्रवेश करती है,

शुभ लगनों वाली बारात,
दरवाजे पर ही तो आती है,
दरवाजा मुझे पसंद है,
किसी दीन-दुखी निरीह को,
दान देने का शुभ कार्य,
दरवाजे पर ही तो होता है,

मेरे परदेसी लाडले का संदेश,
डाकिया दरवाजे पर ही तो देता है,
दरवाजा मुझे पसंद है,
किसी प्रिय आगंतुक का इंतजार,
दरवाजे पर ही तो होता है,

दरवाजा मुझे पसंद है,
जिंदगी के दरवाजे,
बंद हो जाते हैं, तब
'मौत' का 'दरवाजा' ही तो खुलता है।

❀❀❀

25. मथुरा

हम मथुरा की गलियों से गुजर रहे थे,
गोपियों को देखकर, आहें भर रहे थे,
उसी समय, स्मरण हो आया हमें
कृष्ण जी का बाल स्वरुप,
उसी स्वरुप को यादकर,
हमने एक ग्वालिन की,
गगरी पर नजर डारी,
उठाकर पत्थर, हमने गगरी को मारी,
ग्ववालिन ने दी हमें गारी,
कहा – ''ओ ग्वाले,
यह द्वापर नहीं है, जो एक पत्थर से,
गगरी फूट जावे,
स्टेनलेस स्टील की गगरी है,
कोई ऐसो–वैसो पार न पावे,
मथुरा में देखकर चलियो,
हर गली में काफी टर्न है,
और ग्वालिन से देखकर भिड़ियो,
अब मथुरा की ग्वालिन भी माडर्न हैं।

❁❁❁

26. कानून

भारत सरकार ने कानून बनाया,
'रेलवे परिसर में बीड़ी–सिगरेट पीना
दंडनीय अपराध है,
हम ट्रेन में सफर कर रहे थे, तभी
एक महोदय को हमने बीड़ी पीते देखा,
हमने उन्हें कानून की दुहाई देकर रोका,
कि ''बीड़ी पीना दंडनीय अपराध है,''
ये शरीर के लिए व्याध है,
उसने हमें उलटकर जवाब दिया –
''हम कमाता है तो उड़ाता है,
इसमें तेरे बाप का क्या जाता है ?
उनकी बातों को सुनकर,
हमारा मुंह बंद हो गया,
अब सिगरेट और बीड़ी का गंध
मजबूरी में सुगंध हो गया,
हम सोचने लगे– 'देश के लोगों में,
सरकार के प्रति कैसा जुनून है,
हर जगह सिगरेट के धुएँ में
उड़ रहा कानून है।

❁❁❁

27. अखंड भारत

खंड–खंड चीखता, अखंडता–अखंडता,
देख की विराटता और वो प्रचंडता,
काल की बिसात थी, कष्टों की रात थी,
हौसलों की बात थी, स्वतंत्र वो प्रभात थी,
आज फिर वो हाल है, कलियुग की चाल है,
समरसता बेहाल है, पग–पग में काल है,
एकता की राह में, आजादी की चाह में,
आहूति कौन दे रहा, मातृभूमि की पनाह में,
शूल को समूल काट, धूल में सने ललाट,
वैभव परं को जान ले, चुनौतियों को मान ले,
ओजस्विता का सार है, रण की ये पुकार है,
शत्रु का दमन करें, कटे जो सर तो हार है,
दृष्टि खुद की गिद्ध कर, अनुभव में आप वृद्ध कर,
वीर की दहाड़ मार, ''अखंडता'' को सिद्ध कर।

❁❁❁

28. वन्दे – मातरम्

वन्दे–मातरम्, वन्दे–मातरम्
वन्दे–मातरम् जयघोष करें,
सहमी–सहमी सांसों को हम,
हर क्षण यूं नवरोष करें,
राष्ट्रभक्ति का महासमर हो,
क्रांतिकारी फिर बोस गढ़ें,
प्राण – स्तंभित हुए जा रहे,
हर तनमें फिर जोश भरें,
धरती माँ लो मांग रही है,
बलिदानी बन रोज मरें,
परं वैभव की करें कामना,
शत्रु के भी अब होश उड़े,
दुनिया भर लहराये तिरंगा,
''वन्दे–मातरम्'' जयघोष करें।

❁❁❁

29.इतिहास का गौरव

इतिहास बोलता है आज,
ना है शर्म ना ही लाज,
हाल मेरे देश का,
संतों के वेश का,
गौरव था इतिहास का,
दिन भी कुछ खास था,
सत्य को प्रमाण क्या ?
स्वाभिमानी की त्राण क्या ?
क्रांति के मिसाल थे,
बड़े गजब कमाल थे,
आन-बान-शान में,
वीर थे खदान में,
शत्रुओं को फाड़कर,
विजय ध्वजा को गाड़कर,
स्वयं धरा में लेटकर,
स्वतंत्रता दी भेंटकर,
आज मातु रो रही,
धीरता वो खो रही,
रावण बंधु, राम का,
आज अयोध्या नाम का,
भुखमरी और बेकारी है,
हर तरफ मक्कारी है,
वीरों की तलाश में
''गौरव दबा इतिहास में।''

❀❀❀

30. मौत का जश्न

मेरी बरबादी का जश्न तो मनाओ दोस्तों,
क्यो रो रहे हैं लोग मेरी मौत पे दहाड़कर,
रोते हुए हर शख्स को हँसाओ दोस्तों,
मेरी कब्र की महफिल को सूना न करो यूँ,
मैयत पे नये गीत गुनगुनाओं दोस्तों,
इस घड़ी की तमन्ना लिये बैठी है जो मलिका,
उस हुश्न को मेरा दीदार करवाओ दोस्तों,
धड़कते हुए इस दिल को सीने से अब निकाल लो,
कदमों में मेरे यार के बिछाओ दोस्तों,
भेज दो पैगाम, अमीरजादी को मेरी मौत का,
मेरी हसीन मौत की, हँसी तो उड़ाओ दोस्तों।

❀❀❀

31. डर

क्या रखा है जीवन में,
चाहता हूं जिंदगी को,
मौत के हवाले कर दूं,
फिर भी रहता है मरने का डर,
ये डर भी क्या बला है,
इंसान को कर देती है तितर–बितर
वह क्यूं नहीं डरता !
जो अपराधी है,
सोता है होकर बेखबर,
वह क्यूँ नहीं डरता,
जो उँचाई पर है, करता है
लाखों का इधर–उधर,
वह क्यूँ नहीं डरता,
जो मेरा कर्जदार है,
मेरा लहू पीता है, चूस–चूसकर,
''डर'' है तो सिर्फ मेरे लिए !
खड़ी है दुनिया,
जिस कंधे के ऊपर।

❀❀❀

32. संस्कार

निर्लज्जता का प्रदर्शन तो,
अंग्रेजों का काम है,
हम रहते हैं जहाँ,
वह संस्कारों का धाम है,
अरे ! शील का मूल्य असुर क्या जाने,
मर्यादा के स्वामी तो,
भारत के ही श्रीराम हैं।

❀❀❀

33. नवरात्रि

सुन ले माता, भक्तों की पुकार,
करते हैं विनती, कर ले स्वीकार,
मन में हमारे, तेरी भक्ति की धार है,
मनाते हैं खुशियाँ, नवरात्रि त्यौहार है।

❁❁❁

34. नारियां

अबला नहीं अब नारियाँ,
ये हैं प्रबल चिंगारियाँ,
कण-कण करे यही पुकार,
नारी है देवी का अवतार।

❁❁❁

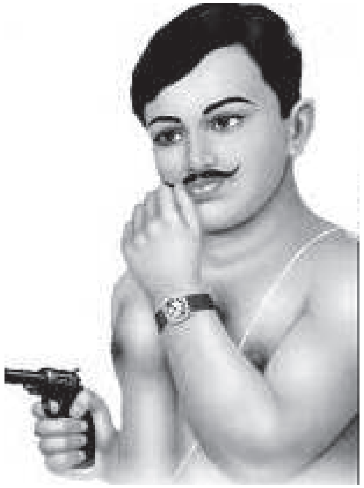

35. आजाद

यह मिट्टी अब फिर से तरसे,
वीरों के सिंहनाद को,
क्रांतियों का समर बहा दो,
मार गिरा जल्लाद को,
धरती माता मांग रही है,
फिर से एक ''आजाद'' को।

❁❁❁

36. चरित्र

हम संस्कार की बात करते हैं,
चरित्र व्यवहार की बात करते हैं,
दुनिया को सत्मार्ग दिखाते हैं,
भलाई की बात सिखाते हैं,
जो अपनी पीढ़ी को नहीं जगाते हैं,
समझो अपने ही घर में आग लगाते हैं,
हमने सभी को परखा है, जांचा है,
बिना चरित्र का मनुष्य ''हड्डियों का ढाँचा है।

❁❁❁

37. माँ

हे माँ दया की दृष्टि डाल,

इस दुनिया से हमको तार दे,

भक्ति सबकी स्वीकार कर,

शारदे माँ शारदे

❁ ❁

38. छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की सौंधी मिट्टी,
भारत में हरियाली छाई,
इधर देखो या उधर,
खुशहाली ही खुशहाली छाई,

पूरी दुनिया गुण गाती जहां के,
बोस और आजाद पूत यहाँ के,
इस मिट्टी की आन हमें प्यारी है,
माँ के चरणों में हाजिर जान हमारी है।

❁❁❁

39. गुरतुर बोली

चारो मुड़ा तिहार के मेला हे,
खुशी के दुकान अउ मया के ठेला हे,
जम्मो झन ल ए मेला म आना हे,
एक–दुसर के मया पीरा गोठियाना हे,
भाईचारा के नंगारा, अउ एकता के बंशी बजाबो,
छत्तीसगढ़ के ''गुरतुर बोली'',
पूरा देश ल सुनाबो।

❁❁❁

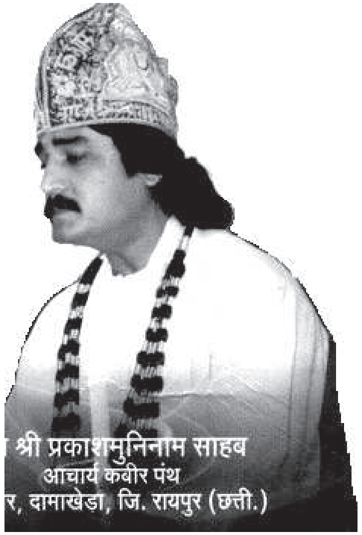

40. गुरु

स्वर्ग की भी है, सीमा रेखा,
धरती पर भगवान किसने देखा !
हर पथ का जो देता ज्ञान,
स्तंभित तन में डाले प्राण,
दुनिया जिससे खत्म और शुरु है,
धरती पर भगवान, हमारे ''गुरु'' हैं

❁❁❁

41.जल

जीवन का अर्थ होता है ''जल''
ऐसा कुछ लोगों ने कहा था कल,
फिर भी जल बरबाद हुआ गली – गली,
इसलिए आज जल–संकट की है खलबली,
अब तो पूर्वजों की बात मानिए,
''अमृत रुपी पानी'' का मोल पहचानिए।

❀❀❀

42.वृक्ष

दुनिया का हर व्यक्ति,
खुदको दिखाता है परोपकारी,
भीतर उसके देखने पर,
झलकती है मक्कारी,
हर जगह केवल कपट
और स्वार्थ का बेड़,
निःस्वार्थ है सिर्फ,
''वृक्ष'' कहो तरू या ''पेड़''।

❀❀❀

43. बाल्मीकि

मंडराने वाले बादल,
काले जरुर होते हैं,
उसमें रहने वाली बूंदें,
कोहिनूर होते हैं,
ऐसे ही, दुनिया में फैली कालिमा
पड़ जाएगी एक दिन फीकी,
अब तक जो थे ''कंस'' और ''रावण''
बन जाएंगे ''वाल्मीकि''।

❀❀❀

44. मन के जीते जीत

खुशियों को ही बेचो राही,
खुशियाँ ही खरीद
अपने मन में जगा लो राही,
जीने की उम्मीद,
गम के सुर को छोड़ दो राही,
खुशियों के गा गीत,
मन के हारे हार है राही,
''मन के जीते जीत''।

❀❀❀

45. भाईचारा

इस जीवन में सबको जल्दी,
रहता है हर पल,
कोई कहता है, आज ही सब कुछ
कोई कहता है, कल
जाना सबका तय है एक दिन,
कौन यहाँ भुजबल ?
पुण्य कमा ले इस जीवन में,
सबसे मिल कर चल।

❁❁❁

46. प्रभु

देखने से लगता है कि, तारे पास हैं,
इन्हें देखकर बनती, जिंदगी में आस है,
यूँ तो देखा नहीं हमने कभी,
फिर भी उस ''प्रभु'' का
हर पल होता अहसास है।

❁❁❁

47.बानी

मोर छत्तीसगढ़ के प्रगति बर
लगाए हववं बानी,
भारत हर महतारी ए,
छत्तीसगढ़ हर रानी,
वीरता के हवय किस्सा,
अउ देश भक्ति के कहानी।

❁❁❁

48. माँ

माँ की ममता का मोल कौन जानता है ?
माँ की महिमा को, तीनों लोक मानता है,
माँ के नाम से होती सुबह और शाम ढलती है,
इतनी बड़ी दिखने वाली दुनिया,
''माँ'' की दया से ही चलती है।

❁❁❁

49 माँ

माँ के कदमों में संसार होता है,
उसकी सेवा से सबका उद्धार होता है,
जो समझता नहीं ''माँ'' की महिमा,
उस मनुष्य का भाग्य बेकार होता है।

❁❁❁

50. राजनीतिक मच्छर

एक बार मोर करा,
मच्छर के जोड़ी हर अइस,
आके अपन दुख ल बतइस,
विनती करिस– कवि भाई, त्राहिमाम !

हमला बचादे,
उड़ाए के शक्ति नइये,
घर तक पहुँचादे, का करिन,
कोनो अपन लहु नई पियन दय,
मनावत रहेन पार्टी,
तेन दिन हर अब गय,

घरो–घर आनी–बानी के,
क्वाइल जलत हे,
उहू नइये त माटीतेल,
अउ जले आइल जलत हे,
जेने ल देखव तेने हमला,
मारे बर हाथ मलत हे,

काम–बुता ल छोड़ के मनखे,
कुकुर कस पाछू परगे,
हाथ–गोड़ म बइठन नइ दय,
हवा म घलो हबरगे,

का राजनीति के मच्छर बर,
एकोठन क्वाइल हे ?
पूरा देस ल जेन चूस डरिस,
ओखर एको फाइल हे,

हमर चाबे म तो मनखे,
आराम से फर्राथे,
राजनीतिक मच्छरल तो,
यमराज घलो डर्राथे,
बता, सही कहत हंव के गलत मोर भइया,
राजनीतिक मच्छर ल मारव, मोला मरइया,

मच्छर के गोहार ल सुनके,
महूँ कहेंव हाल – 'मच्छर भाई,
मैं तो कब ले ए लड़ई,
ल लड़त हंव, अउ
राजनीतिक मच्छर ल,
नई मारे सकेंव,
तभे तो मंच म,
कविता पढ़त हँव।

❀❀❀

51. ग म्म त

ए जिनगी के गोठ,
अड़बड़ लगते छोट,
रहे बर छप्पर,
पक्की होय के खप्पर,
तन बर कपड़ा,
खाय बर रोटी,
इही म सिरागे,
जिनगी के गोटी,
का लेके आना,
अउ का लेके जाना,
अपन नोहय कुछू,
सबो जिनिस बहाना,
बने–बने विचार म,
दुनिया म रहिथे सम्मत,
मिल–जुल के रहव संगी,
हमर जिनगी बनही ''गम्मत''।

❀❀❀